IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 1 of 54 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

एमपीएस-004

(हिन्दी माध्यम)

FROM PREVIOUS YEAR PAPER's

IMPORTANT QUESTION ANSWER's

Guess Paper / Exam Notes

By India's No.1 - Mother Publication

FOR MORE PDF 9485943709

Disclaimer for Guess / Sample Paper By MOTHER NOTES- 8529719732, 99922-90905: -

This PDF contains sample papers compiled from previous years' questions of the IGNOU It is intended to provide you with a general idea of the paper format and may cover some potential questions. However, it is important to note the following:

1. **No Guarantee of Exam Questions:** We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.
2. **Book Study Recommended:** To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.
3. **Use as a Study Aid:** Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.
4. **Self-Responsibility:** Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

We wish you the best of luck with your IGNOU exams. Thank you for using this sample paper as part of your preparation. **By MOTHER NOTES- 8529719732, 99922-90905**

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 2 of 54 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

खंड-I

20 अंकों के प्रश्न - प्रत्येक 500 शब्द

प्रश्न - सार्वजनिक नीति पर महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों का वर्णन करें।

उत्तर- **सार्वजनिक नीति पर महत्वपूर्ण दृष्टिकोण**

लोक नीति, जन समस्याओं के समाधान के उद्देश्य से सरकार द्वारा लिए गए निर्णयों, कार्यों और इरादों के समूह को संदर्भित करती है। समय के साथ, विद्वानों और पेशेवरों ने नीतियों के निर्माण, कार्यान्वयन और मूल्यांकन को समझने के लिए विभिन्न दृष्टिकोण विकसित किए हैं। ये दृष्टिकोण सरकारों के व्यवहार, नागरिकों की भूमिका और संस्थाओं व हित समूहों के प्रभाव का विश्लेषण करने में मदद करते हैं। लोक नीति पर कुछ महत्वपूर्ण दृष्टिकोण निम्नलिखित हैं।

---

1. संस्थागत परिप्रेक्ष्य

संस्थागत दृष्टिकोण विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका जैसी **सरकारी संरचनाओं पर केंद्रित है** । इस दृष्टिकोण के अनुसार, सार्वजनिक नीतियाँ इन संस्थाओं के नियमों, प्रक्रियाओं और प्राधिकार के स्वरूपों द्वारा निर्धारित होती हैं। निर्णय संवैधानिक प्रावधानों, प्रशासनिक कानूनों और सरकारी विभागों के पदानुक्रम से प्रभावित होते हैं। इस दृष्टिकोण की ताकत इस बात पर प्रकाश डालने में निहित है कि औपचारिक संस्थाएँ नीतिगत स्थिरता और वैधता का निर्धारण कैसे करती हैं। हालाँकि, यह अक्सर अनौपचारिक कर्ताओं और बाहरी दबावों की भूमिका को नज़रअंदाज़ कर देता है।

---

2. प्रक्रिया (नीति चक्र) परिप्रेक्ष्य

प्रक्रिया परिप्रेक्ष्य, लोक नीति को **चरणों के एक क्रम के माध्यम से समझाता है** जिसे नीति चक्र कहते हैं। इन चरणों में समस्या की पहचान, एजेंडा निर्धारण, नीति निर्माण, निर्णय लेना, कार्यान्वयन और मूल्यांकन शामिल हैं। यह दृष्टिकोण जटिल नीतिगत गतिविधियों को समझने योग्य चरणों में

FOR MORE PDF 9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 3 of 54 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

विभाजित करने में मदद करता है। यह इस बात पर ज़ोर देता है कि नीति निर्माण एक एकल क्रिया नहीं, बल्कि एक सतत और चक्रीय प्रक्रिया है। इसकी सीमा यह है कि वास्तविक दुनिया में नीति निर्माण हमेशा रैखिक नहीं होता, और चरण एक-दूसरे से ओवरलैप हो सकते हैं।

---

3. समूह (बहुलवादी) परिप्रेक्ष्य

यह दृष्टिकोण सार्वजनिक नीति को **विभिन्न हित समूहों,** जैसे व्यावसायिक संघों, श्रमिक संघों, किसान समूहों और नागरिक आंदोलनों, के बीच प्रतिस्पर्धा का परिणाम मानता है। प्रत्येक समूह पैरवी, अनुनय-विनय और जन अभियानों के माध्यम से नीति निर्माताओं को अपने हितों के पक्ष में प्रभावित करने का प्रयास करता है। बहुलवादियों के अनुसार, नीतिगत निर्णय सौदेबाजी और समझौते से उत्पन्न होते हैं। यह दृष्टिकोण समाज और सरकार के बीच गतिशील अंतःक्रिया को मान्यता देता है, लेकिन यह शक्तिशाली समूहों के कमजोर समूहों पर प्रभुत्व को कम करके आंक सकता है।

---

4. अभिजात वर्ग परिप्रेक्ष्य

अभिजात्य दृष्टिकोण यह तर्क देता है कि सार्वजनिक नीतियाँ मुख्यतः **प्रभावशाली अभिजात्य वर्ग के एक छोटे समूह द्वारा निर्धारित की जाती हैं** - राजनीतिक नेता, नौकरशाह, व्यावसायिक दिग्गज और पेशेवर - जिनके पास निर्णय लेने की शक्ति होती है। आम जनता का प्रभाव सीमित होता है, और नीतिगत विकल्प अक्सर आम जनता के बजाय इन अभिजात्य वर्ग के हितों को दर्शाते हैं। यह दृष्टिकोण शक्ति असमानताओं को उजागर करता है, लेकिन लोकतांत्रिक तंत्र और नागरिक भागीदारी को नज़रअंदाज़ कर सकता है।

---

5. तर्कसंगत परिप्रेक्ष्य

तर्कसंगत दृष्टिकोण यह मानता है कि नीति निर्माताओं का लक्ष्य **तार्किक, साक्ष्य-आधारित और लागत-प्रभावी निर्णय लेना** है। एक तर्कसंगत नीति में लक्ष्य निर्धारित करना, विकल्पों का विश्लेषण करना, लागत और लाभों की तुलना करना और सर्वोत्तम विकल्प का चयन करना शामिल है। यह दृष्टिकोण दक्षता और वैज्ञानिक तरीकों को बढ़ावा देता है। हालाँकि, इसकी अक्सर आलोचना की जाती है क्योंकि वास्तविक दुनिया में नीति-निर्माण में राजनीतिक बाधाएँ, समय की सीमाएँ और अधूरी जानकारी शामिल होती है।

---

6. वृद्धिशील परिप्रेक्ष्य

चार्ल्स लिंडब्लोम द्वारा प्रस्तावित, वृद्धिशील दृष्टिकोण के अनुसार, नीति निर्माता आमतौर पर **मौजूदा नीतियों में** आमूल-चूल परिवर्तन करने के बजाय छोटे-छोटे समायोजन करते हैं। ऐसा सीमित जानकारी, राजनीतिक सावधानी और प्रशासनिक सुविधा के कारण होता है। वृद्धिशील दृष्टिकोण यथार्थवादी, लचीला है और संघर्ष को कम करता है। हालाँकि, यह उन प्रमुख संरचनात्मक मुद्दों का समाधान करने में विफल हो सकता है जिनके लिए व्यापक सुधारों की आवश्यकता होती है।

निष्कर्ष

ये दृष्टिकोण सामूहिक रूप से इस बात की गहरी समझ प्रदान करते हैं कि सार्वजनिक नीतियों को कैसे आकार दिया जाता है और क्रियान्वित किया जाता है। हालाँकि कोई भी एक दृष्टिकोण नीति-निर्माण की जटिलता को पूरी तरह से नहीं समझ पाता, फिर भी ये सभी मिलकर सरकारी कार्यों का विश्लेषण करने, सामाजिक प्रभावों को समझने और नीतिगत परिणामों को बेहतर बनाने के लिए मूल्यवान उपकरण प्रदान करते हैं।

प्रश्न - राष्ट्रवाद के अध्ययन के लिए उदारवादी और मार्क्सवादी दृष्टिकोणों की जांच करें।

उत्तर- राष्ट्रवाद के अध्ययन के लिए उदारवादी और मार्क्सवादी दृष्टिकोणों की जाँच करें

राष्ट्रवाद आधुनिक राजनीतिक व्यवस्थाओं को आकार देने में सबसे प्रभावशाली विचारधाराओं में से एक रहा है। विद्वानों ने राष्ट्रवाद की विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टियों से व्याख्या की है, जिनमें **उदारवादी** और **मार्क्सवादी** दृष्टिकोण प्रमुख हैं। जहाँ उदारवादी विचारक राष्ट्रवाद को व्यक्तिगत अधिकारों, स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक शासन से जुड़ी एक शक्ति के रूप में समझते हैं, वहीं मार्क्सवादी विचारक इसे वर्ग संबंधों, आर्थिक हितों और

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 4 of 54 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

वैचारिक नियंत्रण की अभिव्यक्ति के रूप में समझते हैं। दोनों ही दृष्टिकोण समाज में राष्ट्रवाद के उद्भव और कार्य करने के तरीके की विपरीत किन्तु गहन समझ प्रदान करते हैं।

राष्ट्रवाद के प्रति उदार दृष्टिकोण

उदारवादी दृष्टिकोण राष्ट्रवाद को एक **सकारात्मक और प्रगतिशील शक्ति के रूप में देखता है** जो लोकतांत्रिक समाजों के विकास में सहायक है। उदारवादी सिद्धांतकारों के अनुसार, राष्ट्रवाद उन व्यक्तियों की सामूहिक इच्छाशक्ति से उत्पन्न होता है जो स्वतंत्रता, समानता और न्याय जैसे समान राजनीतिक मूल्यों को साझा करते हैं। इसलिए, यह **प्रकृति में नागरिक है** , जिसका अर्थ है कि राष्ट्र की सदस्यता जातीय मूल पर नहीं, बल्कि साझा राजनीतिक सिद्धांतों पर आधारित है।

उदारवादी दृष्टिकोण की प्रमुख विशेषताएं

1. **राष्ट्र एक स्वैच्छिक संघ के रूप में**
   : उदारवादियों का तर्क है कि राष्ट्र अपने सदस्यों की स्वतंत्र सहमति से निर्मित एक राजनीतिक समुदाय है। इसलिए राष्ट्रीय पहचान लचीली होती है और उन सभी व्यक्तियों के लिए खुली होती है जो समान नागरिक मूल्यों को स्वीकार करते हैं।
2. **व्यक्तिगत अधिकारों और लोकतंत्र पर ज़ोर:**
   उदार राष्ट्रवाद इस बात पर ज़ोर देता है कि राष्ट्र-राज्य व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा करता है। इस प्रकार राष्ट्रवाद राजनीतिक भागीदारी और लोकतांत्रिक स्वशासन का एक साधन बन जाता है।
3. **सार्वभौमिक मूल्यों का संवर्धन:**
   उदारवादी विचारकों का मानना है कि राष्ट्रवाद सार्वभौमिक मानवाधिकारों और नैतिक समानता के अनुकूल होना चाहिए। इसका उद्देश्य अन्य समूहों को बहिष्कृत या उत्पीड़ित करना नहीं है।
4. **आर्थिक प्रगति और आधुनिकीकरण**
   उदार राष्ट्रवाद को अक्सर आर्थिक विकास, कानून के शासन और सामाजिक व्यवस्था और समृद्धि को बढ़ावा देने वाली संस्थाओं से जोड़ा जाता है।

जातीय राष्ट्रवाद की उदारवादी आलोचना

उदारवादी जातीय या सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का कड़ा विरोध करते हैं, जो समान वंश, नस्ल या धर्म पर ज़ोर देता है। उनका तर्क है कि ऐसा राष्ट्रवाद व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए ख़तरा है और भेदभाव और संघर्ष को जन्म दे सकता है।

राष्ट्रवाद के प्रति मार्क्सवादी दृष्टिकोण

मार्क्सवादी दृष्टिकोण राष्ट्रवाद को **भौतिक परिस्थितियों** , आर्थिक संरचनाओं और वर्ग संबंधों का परिणाम मानता है। मार्क्सवादी विचारकों के लिए, राष्ट्रवाद मुख्यतः एक सांस्कृतिक या राजनीतिक आदर्श नहीं है, बल्कि वर्ग प्रभुत्व बनाए रखने के लिए पूंजीवाद द्वारा गढ़ा गया एक उपकरण है।

मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य की प्रमुख विशेषताएँ

1. **बुर्जुआ विचारधारा के रूप में राष्ट्रवाद**
   मार्क्सवादियों के अनुसार, राष्ट्रवाद को पूँजीपति वर्ग (बुर्जुआ वर्ग) द्वारा लोगों को एक ही बाज़ार में एकजुट करने, आर्थिक विस्तार और लाभ सृजन सुनिश्चित करने के लिए बढ़ावा दिया गया था। यह विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच एकता की झूठी भावना पैदा करके वर्ग शोषण को छुपाता है।
2. **पूंजीवादी नियंत्रण का साधन:**
   मार्क्सवादियों का तर्क है कि राष्ट्रवाद, श्रमिकों को अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता विकसित करने से रोकता है। श्रमिकों को राष्ट्रीय आधार पर विभाजित करके, पूंजीवाद, श्रमिक वर्ग के संघर्ष को कमजोर करता है।
3. **ऐतिहासिक भौतिकवाद**
   मार्क्सवादी दृष्टिकोण राष्ट्रवाद की व्याख्या आर्थिक प्रक्रियाओं—औद्योगीकरण, उपनिवेशवाद और वर्ग संघर्ष—के माध्यम से करता है। राष्ट्रीय पहचान को भावनात्मक या सांस्कृतिक संबंधों के बजाय ऐतिहासिक और आर्थिक कारकों द्वारा आकारित माना जाता है।

FOR MORE PDF-9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 5 of 54 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

4. **क्रांतिकारी क्षमता**
   कुछ मार्क्सवादी विचारकों, विशेषकर लेनिन ने, उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्षों में राष्ट्रवाद की क्रांतिकारी क्षमता को पहचाना। उत्पीड़ित राष्ट्रों में, राष्ट्रवाद लोगों को औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध एकजुट कर सकता है।

निष्कर्ष

उदारवादी और मार्क्सवादी, दोनों ही दृष्टिकोण राष्ट्रवाद की अलग-अलग व्याख्याएँ प्रस्तुत करते हैं। जहाँ **उदारवादी राष्ट्रवाद** इसे व्यक्तिगत अधिकारों और लोकतांत्रिक भागीदारी पर आधारित एक एकीकृत नागरिक शक्ति के रूप में देखता है, वहीं **मार्क्सवादी सिद्धांत** राष्ट्रवाद की व्याख्या पूंजीवाद और वर्ग हितों के एक उत्पाद के रूप में करता है, जिसका उपयोग अक्सर बुर्जुआ प्रभुत्व बनाए रखने के लिए किया जाता है। ये सभी दृष्टिकोण मिलकर राष्ट्रवाद की जटिल प्रकृति और आधुनिक राजनीतिक समाजों को आकार देने में इसकी विविध भूमिका को समझने में मदद करते हैं।

ALL SOLVED ASSIGNMENT, GUESS PAPER, PROJECT - HAND WRITTEN SCAN PDF, HARDCOPY BY POST ORDER- ON WHATSAPP MSG- 8529719732, 99922-90905 OR VISIT- motherpublication.in / mothernotes.in

प्रश्न - नागरिक समाज पर ग्राम्शी के विचारों पर चर्चा करें।

उत्तर- **नागरिक समाज पर ग्राम्शी के विचार**

परिचय

इतालवी मार्क्सवादी विचारक एंटोनियो ग्राम्शी ने नागरिक समाज की अवधारणा को पुनर्परिभाषित करके राजनीतिक सिद्धांत में महत्वपूर्ण योगदान दिया। शास्त्रीय मार्क्सवादियों के विपरीत, जिन्होंने मुख्यतः उत्पादन के क्षेत्र में आर्थिक आधार और वर्ग संघर्ष पर ज़ोर दिया, ग्राम्शी ने इस विश्लेषण का विस्तार राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों तक किया। नागरिक समाज के बारे में उनकी समझ यह समझाने के लिए महत्वपूर्ण है कि आधुनिक पूंजीवादी राज्य न केवल बल प्रयोग से, बल्कि सहमति से भी अपना प्रभुत्व कैसे बनाए रखते हैं। ग्राम्शी के सिद्धांत को मुख्यतः उनकी *"प्रिज़न नोटबुक्स" में विस्तार से प्रस्तुत किया गया है*, जहाँ उन्होंने राज्य, नागरिक समाज और आधिपत्य के बीच संबंधों की जाँच की।

नागरिक समाज आधिपत्य का स्थल

ग्राम्शी का तर्क था कि नागरिक समाज वह मुख्य क्षेत्र है जहाँ वैचारिक और सांस्कृतिक नेतृत्व—जिसे **आधिपत्य कहा जाता** है—का निर्माण और रखरखाव होता है। उनके अनुसार, नागरिक समाज में स्कूल, चर्च, मीडिया, ट्रेड यूनियन, स्वयंसेवी संगठन और सांस्कृतिक संगठन जैसी संस्थाएँ शामिल हैं। ये संस्थाएँ मूल्यों, विश्वासों और सामाजिक व्यवहार को आकार देती हैं।

इन संरचनाओं के माध्यम से, शासक वर्ग नैतिक और बौद्धिक नेतृत्व का प्रयोग करता है, जिससे उसका विश्वदृष्टिकोण स्वाभाविक, सामान्य और सर्वमान्य प्रतीत होता है। यह बलपूर्वक नहीं, बल्कि सर्वसम्मति से प्राप्त होता है। इस प्रकार, नागरिक समाज वह तंत्र बन जाता है जिसके माध्यम से एक प्रभुत्वशाली वर्ग अधीनस्थ वर्गों की सक्रिय सहमति प्राप्त करता है।

नागरिक समाज और राज्य

राजनीतिक समाज और **नागरिक समाज** में विभाजित किया । राजनीतिक समाज का तात्पर्य दबाव डालने वाली संस्थाओं से है—सरकार, पुलिस, अदालतें और सेना। दूसरी ओर, नागरिक समाज स्वैच्छिक और सांस्कृतिक संस्थाओं से बना होता है जहाँ आधिपत्य स्थापित होता है। हालाँकि, उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि ये दोनों क्षेत्र आपस में जुड़े हुए हैं और मिलकर एक **अभिन्न राज्य का निर्माण करते** हैं। जहाँ राजनीतिक समाज बल का प्रयोग करता है, वहीं नागरिक समाज अनुनय-विनय का। दोनों का संतुलित संयोजन शासक वर्ग की स्थिरता सुनिश्चित करता है।

FOR MORE PDF-9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU MOTHER PUBLICATION - ASSIGNMENTS & GUESS PAPERS & PYQ SOLVED PDF

INDIA'S NUMBER 1 STUDY MATERIAL PROVIDER

यह केवल एक सैंपल पीडीएफ है।

यह केवल Sample PDF है। पूरी Solved Assignment या Guess Paper PDF खरीदने के लिए हमारी वेबसाइट पर जाएँ

या

WhatsApp पर मैसेज करें।

WHATSAPP ONLY: +91 9485943709

WHATSAPP ONLY:: +91 9992290905

1. Solved Assignment Visit -:: https://motherpublication.in/

2. Pyq Solved Guess paper Visit:-: https://mothernotes.in/

Mother Publication • IGNOU Study Resources